सैय्यदा-ए-आलम(अ0)

सैय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी (ताबा सराह)

इस्लामी दुनिया की जबीने अक़ीदत ख़म है उस मुअज़्ज़मा की बारगाहे असमत के सामने जो पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की एक अकेली बेटी थी और जिससे रसूल (स0) से नाम दुनिया में बाक़ी रहा।

विलादत

आपकी विलादत जमादिस्सानी की 20वीं तारीख़ है। इसमें एक तो कोई इख़्तेलाफ भी नहीं मालूम होता और फिर मुहम्मद बिन जरीर तबरी (शीआी) की रवायत बसनदे मुत्तसिल अबुलबसीर की ज़बानी इमाम जाफर सादिक़ से मौजूद है जो मेरी राय में सहीस्सनद और बिलकुल मुसतनद है। साले विलादत में बेशक इख़्तेलाफ है जिसका बहुत अहम असर आपकी उम्र की ताअीन के मसले पर पड़ता है। शीआ फ़िरक़े में मश्हूर है कि आपकी विलादत बेअसत के पाँच साल बाद हुई और हिजरत के मौक़े पर आपकी उम्र सिर्फ आठ साल की थी। यह उलमा का ख़याल ही नहीं है बल्कि इस मज़मून की रवायत सिक़तुल इस्लाम मुहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी ने मुसलसल इस्नाद के साथ इमाम बाक़र से दर्ज की है जो बएतबार अपने तरीक़े रवायत के ''हसन'' का दर्जा रखती है और मुहम्मद बिन जरीर तबरी की साबिक़ा रवायत में भी जिसे मैंने कहा कि सहीहुस्सनद है यही मज़कूर है और इसी के मुवाफिक़ इब्ने ख़शाब ने इमाम मुहम्मद बाक़िर से नक़ल किया है। और दूसरा क़ौल फिरक़–ए–शीआ में यह है कि बेअसत के दो साल बाद विलादत हुई। इसे शेख़ मुफीद ने हदाएक़ुर्रियाज़ में और कफअमी और शैख़ ने मिस्बाह में दर्ज किया है मगर अइम्मा–ए–मासूमीन की गुज़श्ता अहादीस की मौजूदगी में इस क़ौल को कोई अहमिय्यत नहीं दी जा सकती। इसके बिलकुल बरख़िलाफ अहलेसुन्न्त का यह क़ौल है कि आपकी विलादत बेअसत से पाँच साल पहले हुई है। इस सूरत में हिजरत के वक़्त आपकी उम्र 18 साल थी। मुमकिन है इस रवायत को वाक़ेआत से किसी तरह की ताईद हासिल हो सके मगर ऐसे तमाम मसाएल हैं यह अम्र ख़ुसूसियत के क़ाबिले लिहाज़ है कि किसी घराने के ख़ानदानी हालात के बाब में जिस क़द्र वज़न उसी ख़ानदान के अफराद के बयान का हो सकता है उतना वज़न दूसरे ग़ैर मुताल्लिक़ अश्ख़ास के बयानात को हरगिज़ नहीं हो सकता। खुसूसन जब कि वह ग़ैर मुताल्लिक़ अश्ख़ास उस ज़माने में कोई वजह भी उसको महफ़ूज़ रखने की न रखते हों। यह ज़ाहिर है कि आम मुसलमानों को रसूल (स0) के साथ किसी हद तक ताल्लुक़ जो पैदा हुआ है वह एलानिया तबलीग़े इस्लाम के बाद, इसके पहले कोई बाअिस नहीं था कि वह रसूल (स0) के घर के वाक़ेआत के मुताल्लिक़ कोई दिलचस्पी लेते। इस सूरत में उन्हें ऐसे मामले में कोई धोका हो जाना हरगिज़ क़ाबिले ताज्जुब नहीं है। जबकि तारीख़ निगारी का पहलू मुसलमानों में इतना कमज़ोर था कि इस्लाम को पूरी कुव्वत हासिल हो जाने के बाद और मदीने में मुसलमानों की मरदुम शुमारी हज़ारों की तादाद में पहुँचने के बाद ख़ुद रसूल (स0) की वफात के ऐसे अहम वाक़ेअे की तारीख़ को मुसलमान पूरे तौर पर महफ़ूज़ नहीं रख सके

और आज तक तरद्दुद व इश्तेबाह मौजूद है। फिर क्या कहा जाये उस वाक़ेअे के मुताल्लिक़ जो मुसलमानों के इस्लाम लाने के पहले का हो यानि जिस वक़्त मुसलमानों की जमात मौजूद ही न हो। यक़ीनन एक ग़ैर जानिबदार शख़्स मजबूर है इस बात पर कि उस ख़ानदान के लोगों को अहमिय्यत दे जो ख़ास उस वाक़ेअे से ताल्लुक़ रखते हैं और जिन तक ख़ानदानी ख़ुसुसियात व वाक़ेआत सीना बसीना पहुँच सकते हैं।

वालिदह का इन्तेक़ाल

खदीज–ए–कुबरा जिनके लिए सैय्यद–ए–आलम ऐसी लड़की की विलादत तमाम उनकी ज़िन्दगी का एक क़ीमती माहसल थी, अफसोस है कि सैय्यदा के ज़िन्दगी की बहार देखने के लिए ज़िन्दा नहीं रहीं और न सय्यदा को उनकी माद्दी शफ़क़तों से लज़्ज़त अन्दोज़ होने का मौक़ा मिला।

बेअसते रसूल (स0) को 6 बरस, 8 महीने और 27 दिन गुज़रे थे जब रसूल (स0) की यह बेहतरीन रफीक़े ज़िन्दगी और इस्लाम की परस्तार दुनिया से रुख़सत हुई।

सही रवायत के मुताबिक़ उस वक़्त सैय्यदा की उम्र सिर्फ डेढ़ बरस की क़रार पायी है और उस वक़्त मुसीबत वह होती है जिसमें ज़बाने इज़्हार भी उमूमन दिल की मदद के लिये तैय्यार नही होती।

ख़दीजा को भी अपने आख़िर वक़्त में ख़याल था तो एक, सदमा था तो बस यही कि अफसोस यह लड़की मेरे सामने परवान न चढ़ी। उन्हें बहुत से मवाक़ेअ याद आ रहे थे जब लड़कियों को माँ की ज़रूरत होती है।

असमा बिन्ते उमैस ने उस वक़्त जब सैय्यदा की शादी हुई है उस वक़्त के एक पुर हस्रत वाक़ेअे की याददिहानी की है। वह कहती हैं कि ख़दीजा बिस्तरे मर्ग पर थीं और हालत ग़ैर हो चुकी थी। एक मर्तबा ज़ारो क़तार रोने लगीं और आँखों से आँसुओं की लड़ियाँ जारी हो गयीं। मैंने रोने का सबब पूछा तो कहा कि जब लड़की की शादी होती है और वह पहले पहल अपने शौहर के घर जाती है तो बिलकुल नई नवेली होती है, नया घर, नये लोग। इसलिए अरब में दस्तूर है कि पहली मर्तबा माँ उसके साथ जाती है। मुझे इस वक़्त ख़याल आया कि मैं तो दुनिया से जाती हूँ जब मेरी लड़की जवान होगी तो उसके साथ शौहर के घर कौन जायेगा। अच्छा असमा तुम मुझसे वादा कर लो कि तुम मेरी बच्ची के साथ जाओगी और उसे अकेला न छोड़ोगी। असमा ने वादा किया। चुनानचे उस वक़्त जब सैय्यदा को रुख़सत करके तमाम औरतें वापस गयीं तो असमा ने वापसी का इन्कार किया और ख़दीजा की उस वसीयत का ज़िक्र किया।

यक़ीनन अगर हज़रत ख़दीजा ज़िन्दा रहतीं तो सैय्यद–ए–आलम (अ0) के बहुत से एख़लाक़ी औसाफ व ख़ुसूसियात को माँ के हुस्ने तरबियत का नतीजा क़रार दिया जा सकता था मगर सैय्यदा की एख़लाक़ी बुलनदियाँ सिर्फ रसूल (स0) की तरबियत और सैय्यदा (अ0) के ज़ाती हुस्ने फितरत ही का नतीजा क़रार पाती हैं और कुछ नहीं।

हक़ीक़त यह है कि मर्दों में अली (अ0) और औरतों में फातमा (अ0) यह रसूल (स0) की अमली तरबियत और तालीमी ज़िन्दगी को वह दो मोअजज़े थे जिन्होंने रसूल (स0) के मुअल्लिमाना कमाल को आलमे अबदी हैसियत से साबित कर दिया।

